फणीश्वरनाथ रेणु

PZPERU

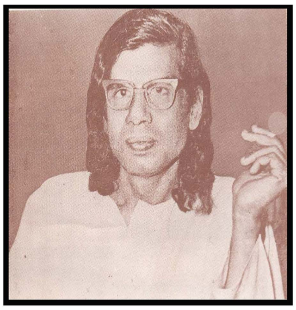

फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म औराही हिंगना नामक गाँव, जिला अररिया (बिहार) में 4 मार्च 1921 को हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गढ़बनैली, सिमरबनी, अररिया और फारबिसगंज में तथा माध्यमिक शिक्षा विराटनगर (नेपाल) के विराटनगर आदर्श उच्च विद्यालय में हुई । रेणु ने 1942 ई० के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक प्रमुख सेनानी की भूमिका निभाई । 1950 ई० में नेपाली जनता को राणाशाही के दमन और अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए वहाँ की सशस्त्र क्रांति और राजनीति में उन्होंने सक्रिय योगदान दिया । वे दमन और शोषण के विरुद्ध आजीवन संघर्षरत रहे । सत्ता के दमनचक्र के विरोध में उन्होंने पद्मश्री की उपाधि का त्याग कर दिया था। 11 अप्रैल 1977 ई० को उनका देहावसान हो गया ।

हिंदी कथा साहित्य में जिन कथाकारों ने युगांतर उपस्थित किया है, फणीश्वरनाथ रेणु उनमें से एक हैं । उन्होंने कथा साहित्य के अतिरिक्त संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज आदि विधाओं को नई ऊँचाई दी । उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं - 'मैला आँचल', 'परती परिकथा', 'दीर्घतपा', 'कलंक मुक्ति', 'जुलूस', 'पल्टू बाबू रोड', (उपन्यास); 'ठुमरी', 'अगिनखोर', 'आदिम रात्रि की महक', 'एक श्रावणी दोपहरी की धूप', 'अच्छे आदमी' (कहानी संग्रह); 'ऋणजल-धनजल', 'वन तुलसी की गंध', 'श्रुत अश्रुत पूर्व' (संस्मरण); 'नेपाली क्रांतिकथा' (रिपोर्ताज) आदि ।

हिंदी में रेणु का वास्तविक उदय 1954 ई० में प्रकाशित उनके बहुचर्चित उपन्यास 'मैला आँचल' से हुआ । 1954 ई० से बहुत पहले 1936 ई० में ही उनकी पहली कहानी 'बटबाबा' एक साप्ताहिक 'विश्वमित्र' में छप चुकी थी । 'मैला आँचल' ने हिंदी कथा साहित्य में आंचलिकता को एक पारिभाषिक अभिधा दी । उपन्यास और कहानी दोनों कथारूपों की अपनी मनोरम कलाकृतियों से रेणु ने गाँव की धरती का जो चित्र खींचा है, वह अमिट छाप छोड़ जाता है । देश के स्वतंत्र हो जाने के बाद नेताओं और कार्यकर्ताओं का ध्यान ग्रामोत्थान की ओर गया । रेणु ने अपनी गहरी संवेदना का परिचय देते हुए गाँवों के संपूर्ण अंतर्विरोधों और अंगड़ाई लेती हुई चेतना को जीवंत कथारूप दिया । उनके गाँव में एक तरफ पुरातन जड़ता और नवीन गत्यात्मकता की टकराहट है, विभिन्न राजनीतिक आंदोलनों के अंतर्विरोध हैं, बिरादरीवाद की कड़वाहट है तो दूसरी तरफ इनके बीच बजती हुई लोक संस्कृति की शहनाई भी है ।

प्रस्तुत कहानी 'लाल पान की बेगम' ग्रामीण परिवेश की कहानी है । नाच देखने-दिखाने के बहाने कहानीकार ने ग्रामीण जीवन के अनेक रंग-रेशे को गहरी संवेदना के साथ प्रकट किया है । गाँव में लोग-बाग किस तरह एक-दूसरे के साथ ईर्ष्या-द्वेष, राग-विराग, आशा-निराशा, हर्ष-विषाद के गहरे आवर्त में बँधे होते हैं, उसकी जीवंत बानगी है - 'लाल पान की बेगम' ।

लाल पान की बेगम

''क्यों बिरजू की माँ, नाच देखने नहीं जाएगी क्या ?''

बिरजू की माँ शकरकंद उबालकर बैठी मन-ही-मन कुढ़ रही थी । अपने आँगन में सात साल का लड़का बिरजू शकरकंद के बदले तमाचे खाकर आँगन में लोट-लोटकर सारी देह में मिट्टी मल रहा था । चंपिया के सर भी चुड़ैल मँडरा रही है..... । आधा आँगन धूप रहते जो गई है सहुआइन की दुकान पर छोवा-गुड़ लाने, सो अभी तक नहीं लौटी; दीया-बाती की बेला हो गई । आए आज लौटके जरा ! बागड़ बकरे की देह में कुकुरमाछी लगी थी, इसलिए बेचारा बागड़ रह-रहकर कूद-फाँद कर रहा था । बिरजू की माँ बागड़ पर मन का गुस्सा उतारने का बहाना ढूँढ़कर निकल चुकी थी । पिछवाड़े की मिर्च की फूली गाछ ! बागड़ के सिवा और किसने कलेवा किया होगा। बागड़ को मारने के लिए एक छोटा ढेला उठा चुकी थी कि पड़ोसिन मखनी फुआ की पुकार सुनाई पड़ी, ''क्यों बिरजू की माँ, नाच देखने नहीं जाएगी क्या ?''

''बिरजू की माँ के आगे नाथ और पीछे पगहिया न हो, तब न फुआ !''

गरम गुस्से में बुझी नुकीली बात फुआ की देह में धँस गई और बिरजू की माँ ने हाथ के ढेले को पास ही फेंक दिया-बेचारा बागड़ को कुकुरमाछी परीशान कर रही है । आ-हा, आय....... हर्र-र-र-र ! आय-आय ?

बिरजू ने लेटे-ही-लेटे बागड़ को एक डंडा लगा दिया । बिरजू की माँ की इच्छा हुई कि जाकर उसी डंडा से बिरजू का भूत भगा दे, किंतु नीम के पास खड़ी पनभरनियों की खिलखिलाहट सुनकर रुक गई । बोली, ''ठहर, तेरे बप्पा ने बड़ा हथछुट्टा बना दिया है तुझे ! बड़ा हाथ चलता है लोगों पर । ठहर !''

मखनी फुआ नीम के पास झुकी कमर से घड़ा उतारकर पानी भरकर लौटती पनभरनियों से बिरजू की माँ की बहकी हुई बात का इंसाफ करा रही थी, ''जरा देखो तो इस बिरजू की माँ को । चार मन पाट (जूट) का पैसा क्या हुआ है, धरती पर पाँव ही नहीं पड़ते । निसाफ करो ! खुद अपने मुँह से आठ दिन पहले से ही गाँव की अली-गली में बोलती फिरी है, हाँ, इस बार बिरजू के बप्पा ने कहा है, बैलगाड़ी पर बैठाकर बलरामपुर का नाच दिखा लाऊँगा । बैल अब अपने घर है तो हजार गाड़ियाँ मँगनी मिल जाएँगी । सो मैंने अभी टोक दिया, नाच देखनेवाली सब तो औन-पौन कर तैयार हो रही हैं, रसोई-पानी कर रही हैं । मेरे मुँह आग लगे, क्यों मैं टोकने गई । सुनती हो, क्या जवाब दिया बिरजू की माँ ने ?''

मखनी फुआ ने अपनी जीभ पोपले मुँह के होठों को एक ओर मोड़कर ऐंठती हुई निकाली, ''अरे-रे-हाँ-हाँ ! बि- र-र-रज्जू की मै-या के आगे नाथ और पीछे पगहिया ना हो, तब्बा न -आ-आ !''

जंगी की पतोहू बिरजू की माँ से नहीं डरती । वह जरा गला खोलकर ही कहती है, ''फुआ आ ! सरबे सित्तलमिटी (सर्वे सेट्लमेंट) के हाकिम के बासा पर ..... यदि तू भी भेटी चढ़ाती तो तुम्हारे नाम से भी दु-तीन बीघा धनहर जमीन का पर्चा कट जाता । फिर तुम्हारे घर भी आज दस मन सोनाबंग पाट होता, जोड़ा बैल खरीदती ! फिर आगे नाथ और पीछे सैंकड़ों पगहिया झूलती !''

बिरजू की माँ के आँगन में जंगी की पतोहू की गला-खोल बोली गुलेल की गोलियों की तरह दनदनाती हुई आई । बिरजू की माँ ने एक तीखा जवाब खोलकर निकाला, लेकिन मन मसोसकर रह गई । ....गोबर की ढेरी में कौन ढेला फेंके !

जीभ के झाल को गले में उतारकर बिरजू की माँ ने अपनी बेटी चंपिया को आवाज दी, ''अरी चंपिया-या-या, आज लौटे तो तेरी मूड़ी मरोड़कर चूल्हे में झोंकती हूँ ! दिन-दिन बेचाल होती जाती है ! गाँव में तो अब ठेठर-वैसकोप का गीत गानेवाली पतुरिया-पतोहू सब आने लगी है । कहीं बैठके 'बाजे न मुरलिया' सीख रही होगी ह-र-जा ई-ई ! अरी चंपिया-या-या-या !''

जंगी की पतोहू ने बिरजू की माँ की बोली का स्वाद लेकर कमर पर घड़े को सँभाला और मटककर बोली, ''चल दिदिया, चल ! इस मुहल्ले में लाल पान की बेगम बसती है ! नहीं जानती, दोपहर-दिन और चौपहर-रात बिजली की बत्ती भक्-भक् कर जलती है !''

भक्-भक् बिजली-बत्ती की बात सुनकर न जाने क्यों सभी खिलखिलाकर हँस पड़ी । फुआ की टूटी हुई दंत-पंक्तियों के बीच से एक मीठी गाली निकली, ''शैतान की नानी !''

बिरजू की माँ की आँखों पर मानो किसी ने तेज टॉर्च की रोशनी डालकर चौंधिया दिया.... भक् -भक् बिजली-बत्ती ! तीन साल पहले सर्वे कैंप के बाद गाँव की जलन-डाही औरतों ने एक कहानी गढ़के फैलाई थी, चंपिया की माँ के आँगन में रात-भर बिजली-बत्ती भुकभुकाती थी ! चंपिया की माँ के आँगन में, नालवाले जूते की छाप, घोड़े की टाप की तरह ! ...जलो, जलो ! और जलो ! चंपिया की माँ के आँगन में चाँदी-जैसी पाट सूखते देखकर जलनेवाली सब औरतें खलिहान पर सोनाली धान के बोझों को देखकर बैगन का भुर्ता हो जाएँगी ।

मिट्टी के बरतन से टपकते हुए छोवा-गुड़ को उँगलियों से चाटती हुई चंपिया आई और माँ से तमाचे खाकर चीख पड़ी, ''मुझे क्यों मारती है एँ-एँ-एँ ? सहुआइन जल्दी से सौदा नहीं देती है एँ-एँ-एँ !''

''सहुआइन जल्दी सौदा नहीं देती की नानी ! एक सहुआइन की ही दुकान पर मोती झरते हैं, जो जड़ गाड़कर बैठी हुई थी । बोल, गले पर लात देकर कल्ला तोड़ दूँगी हरजाई, फिर कभी 'बाजे न मुरलिया' गाते सुना ! चाल सीखने जाती है, टीशन की छोकरियों से !''

बिरजू की माँ ने चुप होकर अपनी आवाज अंदाजी की कि उसकी बात जंगी के झोंपड़े तक साफ-साफ पहुँच गई होगी ।

बिरजू बीती हुई बातों को भूलकर उठ खड़ा हुआ था और धूल झाड़ते हुए बरतन से टपकते गुड़ को ललचाई निगाह से देखने लगा था । दीदी के साथ वह भी दुकान जाता तो दीदी उसे भी गुड़ चटाती, जरूर । वह शकरकंद के लोभ में रहा और माँगने पर माँ ने शकरकंद के बदले......

''ए, मैया, एक अँगुली गुड़ दे-दे !'' बिरजू ने तलहथी फैलाई, ''दे ना मैया, एक रत्तीभर !''

''एक रत्ती क्यों, उठाके बरतन को फेंक आती हूँ पिछवाड़े में; जाके चाटना । नहीं बनेगी मीठी रोटी । ..... मीठी रोटी खाने का मुँह होता है ।'' बिरजू की माँ ने उबले शकरकंद का सूप रोती हुई चंपिया के सामने रखते हुए कहा, ''बैठके छिलके उतार, नहीं तो अभी .... ।''

दस साल की चंपिया जानती है, शकरकंद छीलते समय कम-से-कम बारह बार माँ उसे बाल पकड़कर झकझोरेगी, छोटी-छोटी खोट निकालकर गालियाँ देगी । चंपिया माँ के गुस्से को जानती है ।

बिरजू ने इस मौके पर थोड़ी-सी खुशामद करके देखा, ''मैया, मैं भी बैठकर शकरकंद छीलूँ ?''

''नहीं !'' माँ ने झिड़की दी, ''एक शकरकंद छीलेगा और तीन पेट में । जाके सिद्धू की बहू से कहो, एक घंटे के लिए कड़ाही माँगकर ले गई तो फिर लौटाने का नाम नहीं ।''

मुँह लटकाकर आँगन से निकलते-निकलते बिरजू ने शकरकंद और गुड़ पर निगाह दौड़ाई । चंपिया ने अपने झबरे केश की ओट से माँ की ओर देखा और नजर बचाकर चुपके से बिरजू की ओर एक शकरकंद फेंक दिया ..... बिरजू भागा ।

''सूरज भगवान डूब गए । दीया-बत्ती की बेला हो गई । अभी तक गाड़ी .....''

चंपिया बीच में ही बोल उठी, ''कोयरी टोले में किसी ने गाड़ी नहीं दी मैया ! बप्पा बोले – माँ से कहना, सब ठीक-ठाक करके तैयार रहे ! मलदहिया टोली के मियाँजान की गाड़ी लाने जा रहा हूँ ।''

सुनते ही बिरजू की माँ का चेहरा उतर गया । लगा, छाते की कमानी उतर गई घोड़े से अचानक । जब अपने गाँव के लोगों की आँख में पानी नहीं तो मलदहिया टोली के मियाँजान की गाड़ी का क्या भरोसा ! न तीन में, न तेरह में ! क्या होगा शकरकंद छीलकर ! रख दे उठाके ! ..... यह मर्द नाच दिखाएगा ! बैलगाड़ी पर चढ़ाकर नाच दिखाने ले जाएगा । चढ़ चुकी बैलगाड़ी पर, देख चुकी जी-भर नाच । पैदल जानेवाली सब पहुँचकर पुरानी हो चुकी होंगी ।

बिरजू छोटी कड़ाही सिर पर औंधाकर वापस आया, ''देख दिदिया, मलेटरी टोपी ! इस पर दस लाठी मारने से भी कुछ नहीं होगा ।''

चंपिया चुपचाप बैठी रही, कुछ बोली नहीं, जरा-सी मुसकराई भी नहीं । बिरजू ने समझ लिया, मैया का गुस्सा अभी उतरा नहीं है पूरे तौर से ।

मड़ैया के अंदर से बागड़ को बाहर भगाती हुई बिरजू की माँ बड़बड़ाई, ''कल ही पँचकौड़ी कसाई के हवाले करती हूँ राकस तुझे ! हर चीज में मुँह लगाएगा । चंपिया, बाँध दे बगड़ा को । खोल दे गले की घंटी । टुनुर-टुनुर । मुझे जरा भी नहीं सुहाता है !''

टुनुर-टुनुर सुनते ही बिरजू को सड़क से जाती हुई बैलगाड़ियों की याद हो आई ''अभी बबुआ टोले की गाड़ियाँ नाच देखने जा रही थीं-झुनुर-झुनुर बैलों की झुनकी, तुमने सु.....।''

''बेसी बकबक मत करो !'' बागड़ के गले से झुनक खोलती बोली चंपिया ।

''चंपिया, डाल दे चूल्हे में पानी ! बप्पा आएँ तो कहना कि अपने उड़न-जहाज पर चढ़कर नाच देख आएँ ! मुझे नाच देखने का सौख नहीं ! ..... मुझे जगाओ मत कोई ! मेरा माथा दुख रहा है ।''

मड़ैया के ओसारे पर बिरजू ने फिसफिसा के पूछा, ''क्यों दिदिया, नाच में उड़नजहाज भी उड़ेगा ?''

चटाई पर कथरी ओढ़कर बैठती हुई चंपिया ने बिरजू को चुपचाप अपने पास बैठने का इशारा किया, मुफ्त में मार खाएगा बेचारा ।

बिरजू ने बहन की कथरी में हिस्सा बाँटते हुए चुक्की-मुक्की लगाई । जाड़े के समय इस तरह घुटने पर ठुड्डी रखकर चुक्की-मुक्की लगाना सीख चुका है । उसने चंपिया के कान के पास मुँह ले जाकर कहा, ''हम लोग नाच देखने नहीं जाएँगे ? ....गाँव में एक पंछी भी नहीं है । सब चले गए ।''

चंपिया को अब तिल-भर भी भरोसा नहीं । सँझा तारा डूब रहा है । बप्पा अभी तक गाड़ी लेकर नहीं लौटे । एक महीना पहले से ही मैया कहती थी, 'बलरामपुर के नाच के दिन मीठी रोटी बनेगी; चंपिया छींट की साड़ी पहनेगी, बिरजू पैंट पहनेगा ! बैलगाड़ी पर चढ़कर ...'

चंपिया की भीगी पलकों पर एक बूँद आ गया ।

बिरजू का भी दिल भर आया । उसने मन-ही-मन इमली पर रहनेवाले जिन बाबा को एक बैगन कबूला, गाछ का सबसे पहला बैगन, उसने खुद जिस पौधे को रोपा है ! .....जल्दी से गाड़ी लेकर बप्पा को भेज दो, जिन बाबा ।'

मड़ैया के अंदर बिरजू की माँ चटाई पर पड़ी करवटें ले रही थी । उँहूँ, पहले से किसी बात का मनसूबा नहीं बाँधना चाहिए किसी को ! भगवान ने मनसूबा तोड़ दिया । उसको सबसे पहले भगवान से पूछना चाहिए, यह किस चूक का फल दे रहे हो भोला बाबा ! अपने जानते उसने किसी देवता-पित्तर की मान-मनौती बाकी नहीं रखी ! सर्वे के समय जमीन के लिए जितनी मनौतियाँ की थीं - ठीक ही तो ! महाबीरजी का रोट तो बाकी ही है । हाय रे दैव !- भूल-चूक माफ करो महाबीर बाबा । मनौती दूनी करके चढ़ाएगी बिरजू की माँ !....

बिरजू की माँ के मन में रह-रहकर जंगी की पतोहू की बातें चुभती हैं, भक्-भक् बिजली-बत्ती ! ....चोरी-चमारी करनेवाले की बेटी-पतोहू जलेगी नहीं ! पाँच बीघा जमीन क्या हासिल की है बिरजू के बप्पा ने, गाँव की भाईखौकियों की आँखों में किरकिरी पड़ गई है । खेत में पाट लगा देखकर गाँव के लोगों की छाती फटने लगी, धरती फोड़कर पाट लगा है; वैशाखी बादलों की तरह उमड़ते आ रहे हैं पाट के पौधे ! तो अलान तो फलान ! तनी आँखों की धार भला फसल सहे ! जहाँ पंद्रह मन पाट होना चाहिए, सिर्फ दस मन पाट काँटा पर तौल का ओजन हुआ रब्बी भगत के यहाँ । .....

इसमें जलने की क्या बात है भला ! .....बिरजू के बप्पा ने तो पहले ही कुर्मी टोला के एक आदमी को समझाके कहा था, 'जिंदगी-भर मजदूरी करते रह जाओगे । सर्वे का समय आ रहा है, लाठी कड़ी करो तो दो-चार बीघे जमीन हासिल कर सकते हो । सो गाँव की किसी पुतखौकी का भतार सर्वे के समय बाबू साहेब के खिलाफ खाँसा भी नहीं ।.... बिरजू के बप्पा को कम सहना पड़ा है ! बाबू साहेब गुस्से से सरकस नाच के बाघ की तरह हुमड़ते रह गए । उनका बड़ा बेटा घर में आग लगाने की धमकी देकर गया । ...आखिर बाबू साहेब ने अपने सबसे छोटे लड़के को भेजा । बिरजू की माँ को 'मौसी' कहके पुकारा-'यह जमीन बाबूजी ने मेरे नाम से खरीदी थी । मेरी पढ़ाई-लिखाई उसी जमीन की उपज से चलती है । ....और भी कितनी बातें। खूब मोहना जानता है । उत्तना जरा-सा लड़का । जमींदार का बेटा है कि-

''चंपिया, बिरजू सो गया क्या ? यहाँ आ जा बिरजू, अंदर । तू भी आ जा, चंपिया ! – भला आदमी आवे तो एक बार आज !''

बिरजू के साथ चंपिया अंदर चली गई ।

''ढिबरी बुझा दे । .... बप्पा बुलाए तो जवाब मत देना, खपच्ची गिरा दे ।''

भला आदमी रे, भला आदमी ! मुँह देखो जरा इस मर्द का । ...बिरजू की माँ दिन-रात मंझा न देती तो ले चुके थे जमीन ! रोज आकर माथा पकड़के बैठ जाएँ, मुझे जमीन नहीं लेनी है बिरजू की माँ, मजूरी ही अच्छी । ....जवाब देती थी बिरजू की माँ खूब सोच-समझके । 'छोड़ दो, जब तुम्हारा कलेजा ही थिर नहीं होता है तो क्या होगा । जोरू-जमीन जोर के, नहीं तो किसी और के !-

बिरजू के बाप पर बहुत तेजी से गुस्सा चढ़ता है । चढ़ता ही जाता है । ...बिरजू की माँ का भाग ही खराब है, जो ऐसा गोबर गणेश घरवाला उसे मिला । कौन-सा सौख-मौज दिया है उसके मर्द ने । कोल्हू के बैल की तरह खटकर सारी उम्र काट दी इसके यहाँ, कभी एक पैसे की जलेबी भी लाकर दी है, उसके खसम ने ? - पाट का दाम भगत के यहाँ से लेकर बाहर-ही-बाहर बैल-हट्टा चले गए । बिरजू की माँ को एक बार नमरी लोट देखने भी नहीं दिया आँख से । बैल खरीद आए । उसी दिन से गाँव में ढिंढोरा पीटने लगे, 'बिरजू की माँ इस बार बैलगाड़ी पर चढ़कर जाएगी नाच देखने ।' ....दूसरे की गाड़ी के भरोसे नाच दिखाएगा !..

अंत में उसे अपने-आप पर क्रोध आया । वह खुद भी कुछ कम नहीं ! उसकी जीभ में आग लगे ! बैलगाड़ी पर चढ़कर नाच देखने की लालसा किस कुसमय में उसके मुँह से निकली थी, भगवान जानें । फिर आज सुबह से दोपहर तक किसी-न-किसी बहाने उसने अट्ठारह बार बैलगाड़ी पर नाच देखने जाने की चर्चा छेड़ी है । लो खूब देखो नाच ! वाह रे नाच ! कथरी के नीचे दुशाले का सपना ! ...कल भोरे पानी भरने के लिए जब जाएगी, पतली जीभवाली पतुरिया सब हँसती आएँगी, हँसती जाएँगी । ...सभी जलते हैं उससे हाँ, भगवान दाढ़ी जार भी ! दो बच्चे की माँ होकर भी वह जस-की-तस है । उसका घरवाला उसकी बात में रहता है । वह बालों में गरी का तेल डालती है । उसकी अपनी जमीन है । है किसी के पास एक धुर जमीन भी अपनी इस गाँव में ! जलेंगे नहीं, तीन बीघे में धान लगा हुआ है, अगहनी ! लोगों की विखदीठ से बचे, तब तो !

बाहर बैलों की घंटी है, क्यों री चंपिया ?''

चंपिया और बिरजू ने प्राय: एक ही साथ कहा, ''हूँ-ऊँ-ऊँ !''

''चुप !'' बिरजू की माँ ने फिसफिसाकर कहा, ''शायद गाड़ी भी है ! घड़घड़ाती है न ?''

''हूँ-ऊँ-ऊँ !'' दोनों ने फिर हुंकारी भरी !

''चुप गाड़ी नहीं है ! तू चुपके से टट्टी में छेद करके देख तो आ चंपी ! भागके आ, चुपके-चुपके ।''

चंपिया बिल्ली की तरह हौले-हौले पाँव से टट्टी के छेद से झाँक आई, ''हाँ मैया, गाड़ी है ।''

बिरजू हड़बड़ाकर उठ बैठा । उसकी माँ ने उसे हाथ पकड़कर सुला दिया, ''बोलो मत !''

चंपिया भी गुदड़ी के नीचे घुस गई ।

बाहर बैलगाड़ी खोलने की आवाज हुई । बिरजू के बाप ने बैलों को जोर से डाँटा, ''हाँ-हाँ ! आ गए घर ! घर आने के लिए छाती फटी जाती थी ।''

बिरजू की माँ ताड़ गई, जरूर मलदहिया टोली में गांजे की चिलम चढ़ रही थी; आवाज तो बड़ी खनखनाती हुई निकल रही है ।

''चंपिया है ।'' बाहर से ही पुकारकर कहा उसके बाप ने, ''बैलों को घास दे दे, चंपिया है !''

अंदर से कोई जवाब नहीं आया । चंपिया के बाप ने आँगन में आकर देखा तो न रोशनी, न चिराग, न चूल्हे में आग....बात क्या है । नाच देखने, उतावली होकर, पैदल ही चली गई क्या....।

बिरजू के गले में खसखसाहट हुई और उसने रोकने की पूरी कोशिश भी की, लेकिन खाँसी जब शुरू हुई तो पूरे पाँच मिनट तक वह खाँसता रहा ।

''बिरजू बेटा ! बेटा बिरजमोहन !'' बिरजू के बाप ने पुचकारकर बुलाया, ''मैया गुस्से के मारे सो गई क्या ? ...अरे, अभी तो लोग जा ही रहे हैं ।''

बिरजू की माँ के मन में आया कि कसकर जवाब दे, 'नहीं देखना नाच ! लौटा दो गाड़ी ।'
''चंपिया है ! उठती क्यों नहीं ? ले धान की पँचसीस रख दे ।'' धान की बालियों का छोटा झब्बा झोंपड़े के ओसारे पर रखकर उसने कहा, ''दीया बालो !''

बिरजू की माँ उठकर ओसारे पर आई, ''डेढ़ पहर रात को गाड़ी लाने की क्या जरूरत थी ? नाच तो खत्म हो रहा होगा ।''

ढिबरी की रोशनी में धान की बालियों का रंग देखते ही बिरजू की माँ के मन का सब मैल दूर हो गया । धानी रंग उसकी आँखों से उतरकर रोम-रोम में घुस गया ।

''नाच अभी शुरू भी नहीं हुआ होगा । अभी-अभी बलरामपुर के बाबू की संपनी गाड़ी मोहनपुर होटिल बंगला से हाकिम साहब को लाने गई है । इस साल आखिरी नाच है । ...पंचसीस टट्ट में खोंस दे, अपने खेत का है ।''

''अपने खेत का ?'' हुलसती हुई बिरजू की माँ ने पूछा, ''पक गए धान ?''

''नहीं, दस दिन में अगहन चढ़ते-चढ़ते लाल होकर झुक जाएँगी, सारे खेत की बालियाँ । मलदहिया टोली जा रहा था, अपने खेत में धान देखकर आँखें जुड़ा गईं । सच कहता हूँ, पँचसीस तोड़ते समय ऊँगलियाँ काँप रही थीं मेरी ।''

बिरजू ने धान की एक बाली से एक धान लेकर मुँह में डाल लिया और उसकी माँ ने एक हल्की डाँट दी, ''कैसा लुक्कड़ है तू रे ! ....इन दुश्मनों के मारे कोई नेम-धरम जो बचे ।''

''क्या हुआ, डाँटती क्यों है ?''

''नवान्न के पहले ही नया धान जुठा दिया, देखते नहीं ?''

''अरे इन लोगों का सबकुछ माफ है । चिरई-चुरमुन हैं ये लोग ! बस हम दोनों के मुँह में नवान्न के पहले नया अन्न न पड़े ।''

इसके बाद चंपिया ने भी धान की बाली से दो धान लेकर, दाँतों-तले दबाया, ''ओ भैया ! इतना मीठा चावल !''

''और गमकता भी है न दिदिया ?'' बिरजू ने फिर मुँह में धान लिया ।

''रोटी-पोटी तैयार कर चुकी क्या ?'' बिरजू के बाप ने मुस्कराकर पूछा ।

''नहीं !'' मान-भरे सुर में बोली बिरजू की माँ, ''खाने का ठीक-ठिकाना नहीं - और रोटी बनाती है ।''

''वाह ! खूब हो तुम लोग ! जिसके पास बैल है, उसे गाड़ी मँगनी नहीं मिलेगी भला ? गाड़ीवालों को भी बैल की कभी जरूरत होगी । -पूछूँगा तब कोयरीटोला वालों से ! -ले, जल्दी से रोटी बना ले ।''

''देर नहीं होगी ?''

''अरे टोकरी-भर रोटी तो तू पलक मारते बना लेती है; पाँच रोटियाँ बनने में कितनी देर लगेगी ।''

अब बिरजू की माँ के ओठों पर मुस्कराहट खुलकर खेलने ली । उसने नजर बचाकर देखा, बिरजू का बप्पा उसकी ओर एकटक निहार रहा है । .....चंपिया और बिरजू न होते तो मन की बात हँसकर खोलते देर न लगती । चंपिया और बिरजू ने एक-दूसरे को देखा और खुशी से उनके चेहरे जगमगा उठे । ......मैया बेकार गुस्सा हो रही थी !

''चंपिया ! जरा घैलसार में खड़ी होकर भवानी फुआ को आवाज दे तो ।''

''ऐ फु-आ-आ ! सुनती हो फुआ-आ ! मैया बुला रही है ।''

फुआ ने कोई जवाब सीधे नहीं दिया, किंतु उसकी बड़बड़ाहट स्पष्ट सुनाई पड़ी, ''हाँ, अब फुआ को क्यों गुहारती है ? सारे टोले में बस एक फुआ ही तो बिना नाथ-पगहियावाली है।''

''अरी फुआ !'' बिरजू की माँ ने हँसकर जवाब दिया, ''उस समय बुरा मान गई थी क्या ? नाथ-पगहियावाले को आकर देखो, दोपहर रात में गाड़ी को लेकर आया है । आ जाओ फुआ, मैं मीठी रोटी पकाना नहीं जानती ।''

फुआ खाँसती-खाँसती आई, ''इसी से घड़ी-पहर दिन रहते ही पूछ रही थी कि नाच देखने जाएगी क्या ? कहती, तो मैं पहले से ही अपनी अँगीठी यहाँ सुलगा जाती ।''

बिरजू की माँ ने फुआ को अँगीठी दिखला दी और कहा, ''घर में अनाज-दाना वगैरह तो कुछ है नहीं । एक बागड़ है और कुछ बरतन-वासन । सो रातभर के लिए यहाँ तंबाकू रख जाती हूँ । अपना हुक्का ले आई हो न फुआ ?''

फुआ को तंबाकू मिल जाए तो रात-भर क्या, पाँच रात बैठकर जाग सकती है । फुआ ने अँधेरे में टटोलकर तंबाकू का अंदाज किया । .....ओ हो ! हाथ खोलकर तंबाकू रखा है बिरजू की माँ ने ! और एक वह है सहुआईन ! राम कहो ! उस रात को अफीम की गोली की तरह मटर-भर तंबाकू रख कर चली गई गुलाब-बाग मेले और कह गई कि डिब्बा-भर तंबाकू है ।

बिरजू की माँ चूल्हा सुलगाने लगी । चंपिया ने शकरकंद को मसलकर गोले बनाए और बिरजू सिर पर कड़ाही औंधाकर अपने बाप को दिखलाने लगा, ''मालेटरी टोपी ! सिर पर दस लाठी मारने से भी कुछ नहीं होगा ।''

सभी ठठाकर हँस पड़े । बिरजू की माँ हँसकर बोली, ''ताखे पर तीन-चार मोटे शकरकंद हैं, दे दे बिरजू को चंपिया, बेचारा शाम से ही .....''

''बेचारा मत कहो मैया, खूब लचारा है !'' अब चंपिया चहकने लगी, ''तुम क्या जानो, कथरी के नीचे मुँह क्यों चल रहा था बाबू साहब का !''

''ही-ही-ही !''

बिरजू के टूटे दूध के दाँतों की फाँक से बोली निकली, ''बिलैक-मारटिन में पाँच शकरकंद खा लिए ! हा-हा-हा !''

सभी फिर ठठाकर हँस पड़े । बिरजू की माँ ने फुआ का मन रखने के लिए पूछा, ''एक कनवाँ गुड़ है । आधा डाल दूँ फुआ ?''

फुआ ने गद्‌गद होकर कहा, ''अरी शकरकंद तो खुद मीठा होता है, उतना क्यों डालेगी !''

जब तक दोनों बैल दाना-घास खाकर एक-दूसरे की देह को जीभ से चाटें, बिरजू की माँ तैयार हो गई । चंपिया ने छींट की साड़ी पहनी और बिरजू बटन के अभाव में पैंट पर पटसन की डोरी बाँधने लगा ।

बिरजू की माँ ने आँगन से निकल गाँव की ओर कान लगाकर सुनने की चेष्टा की, ''ऊहूँ, इतनी देर तक भला पैदल जानेवाले रुके रहेंगे !''

पूर्णिमा का चाँद सिर पर आ गया है .... बिरजू की माँ ने असली रूपा का मँगटीका पहना है आज, पहली बार । बिरजू के बप्पा को हो क्या गया है, गाड़ी जोतता क्यों नहीं, मुँह की ओर एकटक देख रहा है, मानो नाच की लाल पान की.....

गाड़ी पर बैठते ही बिरजू की माँ की देह में एक अजीब गुदगुदी लगने लगी । उसने बाँस की बल्ली को पकड़कर कहा, ''गाड़ी पर अभी बहुत जगह है । जरा दाहिनी सड़क से गाड़ी हाँकना ।''

बैल जब दौड़ने लगे और पहिया चूँ-चूँ करके घरघराने लगा तो बिरजू से नहीं रहा गया, ''उड़नजहाज की तरह उड़ाओ बप्पा !''

गाड़ी जंगी के पिछवाड़े पहुँची । बिरजू की माँ ने कहा, ''जरा जंगी से पूछो न, उसकी पतोहू नाच देखने चली गई क्या ?

गाड़ी रुकते ही जंगी के झोंपड़े से आती हुई रोने की आवाज स्पष्ट हो गई । बिरजू के बप्पा ने पूछा, ''जंगी भाई, काहे कन्ना-रोहट हो रहा है । आँगन में ?''

जंगी घूर ताप रहा था, बोला, 'क्या पूछते हो, जंगी बलरामपुर से लौटा नहीं, पतोहिया नाच देखने कैसे जाए ? आसरा देखते-देखते उधर गाँव की सभी औरतें चली गईं ।''

''अरी टीशनवाली, तो रोती है ?'' बिरजू की माँ ने पुकारकर कहा, ''आ जा झट से कपड़ा पहनकर । सारी गाड़ी पड़ी है ! बेचारी ! .....आ जा जल्दी !''

बगल की झाड़ी से राधे की बेटी सुनरी ने कहा, ''काकी, गाड़ी में जगह है ? मैं भी जाऊँगी !''

बाँस की झाड़ी के उस पार लरेना खबास का घर है । उसकी बहू भी नहीं गई है । गिलट की झुनकी कड़ा पहनकर झमकती आ रही है ।

''आ जा ! जो बाकी रह गई, सब आ जाए जल्दी !''

जंगी की पतोहू, लरेना की बीवी और राधे की बेटी सुनरी, तीनों गाड़ी के पास आईं । बैल ने पिछला पैर फेंका । बिरजू के बाप ने एक भद्दी गाली दी ''साला ! लताड़ मारकर लँगड़ी बनाएगा पतोहू को !''

सभी ठठाकर हँस पड़े । बिरजू के बाप ने घूँघट में झुकी दोनों पतोहुओं को देखा । उसे अपने खेत की झुकी हुई बालियों की याद आ गई !

जंगी की पतोहू का गौना तीन ही मास पहले हुआ है । गौने की रंगीन साड़ी से कड़वे तेल और लठवा-सिंदूर की गंध आ रही है । बिरजू की माँ को अपने गौने की याद आई । उसने कपड़े की गठरी से तीन मीठी रोटियाँ निकालकर कहा, ''खा ले एक-एक कर । सिमराहा के सरकारी कूप में पानी पी लेना ।''

गाड़ी गाँव से बाहर होकर धान के खेतों की बगल से जाने लगी । चाँदनी कार्तिक की ! ...खेतों से धान के झरते फूलों की गंध आती है । बाँस की झाड़ी में कहीं दुद्धी की लता फूली है । जंगी की पतोहू ने एक बीड़ी सुलगा कर बिरजू की माँ की ओर बढ़ाई । बिरजू की माँ को अचानक याद आई चंपिया, सुनरी, लरेना की बीवी और जंगी की पतोहू, ये चारों ही तो गाँव में वैसकोप का गीत गाना जानती हैं । खूब !

गाड़ी की लीक धनखेतों के बीच होकर गई है । चारों ओर गौने की साड़ी की खसमसाहट-जैसी आवाज होती है ....बिरजू की माँ के माथे में मँगटीक्के पर चाँदनी छिटकती है ।

''अच्छा, अब एक बैसकोप का गीत गा तो चंपिया । डरती है काहे ? जहाँ भूल जाएगी, बगल में तो मास्टरनी बैठी ही है !''

दोनों पतोहुओं ने तो नहीं, किंतु चंपिया और सुनरी ने खखारकर गला साफ किया ।

बिरजू के बाप ने बैलों को ललकारा, ''चल भैया, और जरा जोर से । ......गा रे चंपिया, नहीं तो बैलों को धीरे-धीरे चलने को कहूँगा ।''

जंगी की पतोहू ने चंपिया के कान के पास घूँघट ले जाकर कुछ कहा और चंपिया ने धीमे से शुरू किया -चंदा की चाँदनी .....''

बिरजू को गोद में लेकर बैठी उसकी माँ की इच्छा हुई कि वह भी साथ-साथ गीत गाए । बिरजू की माँ ने जंगी की पतोहू की ओर देखा, धीरे-धीरे गुनगुना रही है वह भी । कितनी प्यारी पतोहू है ! गौने की साड़ी से एक खास किस्म की गंध निकलती है । ठीक ही तो कहा है उसने ! बिरजू की माँ बेगम है, लाल पान की बेगम ! यह तो कोई बुरी बात नहीं । हाँ, वह सचमुच लाल पान की बेगम है !

बिरजू की माँ ने अपनी नाक पर दोनों आँखों को केंद्रित करने की चेष्टा करके अपने रूप की झाँकी ली, लाल साड़ी की झिलमिल किनारी, मँगटीक्का पर चाँद । ...बिरजू की माँ के मन में अब और कोई लालसा नहीं । उसे नींद आ रही है ।

◆ ◆ ◆

अभ्यास

पाठ के साथ

1. बिरजू की माँ को लाल पान की बेगम क्यों कहा गया है ?
2. ''नवान्न के पहले ही नया धान जुठा दिया ।'' इस कथन से बिरजू की माँ का कौन-सा मनोभाव प्रकट हो रहा है ?
3. बिरजू की माँ बैठी मन-ही-मन क्यों कुढ़ रही थी ?
4. 'लाल पान की बेगम' शीर्षक कहानी की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।
5. सप्रसंग व्याख्या करें –
   (क) ''चार मन पाट (जूट) का पैसा क्या हुआ है, धरती पर पाँव ही नहीं पड़ते ।''
6. ''दस साल की चंपिया जानती है कि शकरकंद छीलते समय कम-से-कम बारह बार माँ उसे बाल पकड़कर झकझोरेगी, छोटी-छोटी खोट निकालकर गालियाँ देगी ।'' इस कथन से चंपिया के प्रति माँ की किस मनोभावना की अभिव्यक्ति होती है ?
7. ''बिरजू की माँ का भाग ही खराब है, जो ऐसा गोबर गनेश घरवाला उसे मिला । कौन-सा सौख-मौज दिया है उसके मर्द ने । कोल्हू के बैल की तरह खटा कर सारी उम्र काट दी इसके यहाँ ।'' प्रस्तुत कथन से बिरजू की माँ और पिता के संबंधों में कड़वाहट दिखाई पड़ती है । कड़वाहट स्थाई है या अस्थाई ? इसके कारणों पर विचार कीजिए ।
8. गाँव की गरीबी तथा आपसी क्रोध और ईर्ष्या के बीच भी वहाँ एक प्राकृतिक प्रसन्नता निवास करती है । पाठ के आधार पर बताएँ ।
9. कहानी में बिरजू और चंपिया की चंचलता और बालमन के कुछ उदाहरण प्रस्तुत करें ।
10. 'लाल पान की बेगम' कहानी का सारांश लिखें ।
11. कहानी के पात्रों का परिचय अपने शब्दों में दीजिए ।
12. रेणु वातावरण और परिस्थिति का सम्मोहक और जीवंत चित्रण करने में निपुण हैं । इस दृष्टि से रेणु की विशेषताएँ अपने शब्दों में बताइए ।

पाठ के आस-पास

1. फणीश्वरनाथ रेणु ने ग्रामीण परिवेश पर कई कहानियाँ लिखी हैं । उनकी कहानियों का 'ठुमरी' नामक संग्रह उपलब्ध कर पढ़ें एवं वर्ग में उस पर चर्चा करें ।
2. ग्रामीण समाज में गरीबी एक प्रमुख समस्या है । इस पर एक निबंध लिखें ।
3. आंचलिकता क्या है ? इस विषय पर अपने शिक्षक से चर्चा करें ।

4. रेणु की किस कहानी पर फिल्म का निर्माण किया गया ? उस कहानी को उपलब्ध कर पढ़ें एवं उसकी चर्चा शिक्षक से करें ।
5. रेणु के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक संक्षिप्त लेख लिखें ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित लोकोक्तियों का अर्थ बताते हुए स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग करें –
   (i) आगे नाथ न पीछे पगहिया ।
   (ii) कथरी के नीचे दुशाले का सपना ।
   (iii) धरती पर पाँव न पड़ना ।
2. सहुआइन में आइन प्रत्यय लगा हुआ है । आइन प्रत्यय से पाँच शब्द बनाएँ –
3. निम्नलिखित शब्दों का प्रत्यय बताएँ –
   पड़ोसिन, पगहिया, मुरलिया, खिलखिलाहट
4. निम्नलिखित शब्दों के समास निर्धारित करें –
   रसोई-पानी, पँचकौड़ी, मान-मनौती, दीया-बाती, बेटी-पतोहू
5. ''जोरू जमीन जोर के नहीं तो किसी और के'' कहावत का अर्थ वाक्य-प्रयोग द्वारा स्पष्ट करें ।
6. पाठ से देशज शब्दों को छाँटकर लिखें ।

शब्द निधि :

बागड़	:	बकरे की एक खास नस्ल जो कद-काठी में सामान्य बकरे से बड़ी होती है	लालसा	:	इच्छा
			कनवाँ	:	छँटाक (पुरानी माप)
			ढिबरी	:	दीया
मड़ैया	:	फूस से बनी कुटिया	दुशाला	:	एक विशेष किस्म की कश्मीरी ऊनी चादर
मनसूबा	:	इरादा			
मनौती	:	मनोकामना की पूर्ति के लिए किया गया संकल्प	झिड़की	:	डाँट
			खुशामद	:	चापलूसी
किरकिरी	:	फजीहत	हौले	:	धीरे-धीरे
पतुरिया	:	नई, शौकीन औरत	लुक्कड़	:	लफंगा
डाह	:	ईर्ष्या	ताखे	:	दीवार में चीजें रखने के लिए बना ताख, आला
मन मसोसना	:	मानसिक विवशता			
कल्ला	:	जबड़ा	मूड़ी	:	माथा
लताड़	:	दुलत्ती मारना, डाँट-डपट करना	राकस	:	राक्षस
			ओजन	:	वजन
झाँकी	:	दृश्य	टीशन	:	स्टेशन